रजिस्ट्री सं. डी. एल.-33004/93 REGD. NO. D.L.-33004/93

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 19] नई दिल्ली, मंगलवार, जनवरी 25, 1994/माघ 5, 1915
No. 19] NEW DELHI, TUESDAY, JANUARY 25, 1994/MAGHA 5, 1915

राष्ट्रपति सचिवालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 25 जनवरी, 1994

सं. 11-प्रेज/94.—राष्ट्रपति, निम्नलिखित व्यक्ति को उसकी अति असाधारण वीरता के लिए अशोक चक्र प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

कर्नल नीलकंठन जयचन्द्रन नायर (आई सी–25070)
कीर्ति चक्र,
16 मराठा लाइट इन्फैन्ट्री (मरणोपरान्त)
(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 20 दिसम्बर, 1993)

कर्नल नीलकंठन जयचन्द्रन नायर, कीर्ति चक्र, 16वीं बटालियन मराठा लाइट इन्फैन्ट्री के कमान अफसर थे । मई से दिसम्बर 1993 तक, उत्तर एवं मध्य नागालैंड के आतंकवाद ग्रसित क्षेत्रों में अपना दायित्व सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद उनकी बटालियन अपने निश्चित स्थान पर वापस जाने की प्रक्रिया में थी ।

20 दिसम्बर, 1993 को कर्नल नायर अपनी बटालियन की दो कंपनियों का नेतृत्व करते हुए अग्रिम दल के साथ नागालैंड में मोकोकचुंग-मरियानी मार्ग पर मान की ओर जा रहे थे जब प्रातः 8 बजकर 40 मिनट पर एक विद्रोही गुट ने घात लगाकर आक्रमण किया । पूर्व-सुनियोजित तैयारी से किए गए इस हमले में लगभग एक सौ विद्रोहियों के स्वचालित शस्त्रों की भयंकर गोलीबारी में उस मराठा बटालियन के एक जूनियर कमीशंड अफसर और तेरह जवान शहीद हो गए, कर्नल नायर स्वयं बुरी तरह घायल हो गए । किन्तु इससे वे न विचलित हुए, न हिम्मत हारे ।

दस वर्ष पहले 1983 में, मिजोरम में विद्रोहियों से जूझने और अपनी दोनों जांघों में गोलियां लगने के बावजूद एक विद्रोही का काम तमाम करने का साहसिक अनुभव था उन्हें । उसी सैन्य कार्रवाई में वह बने कीर्ति चक्र विजेता।

उसी प्रकार 20 दिसम्बर, 1993 को नागालैंड में बुरी तरह घायल होने के बावजूद कर्नल नायर कोहनी और घुटनों के बल रेंगते हुए सड़क के दूसरे छोर पर पहुंचे । उठी हुई पहाड़ी जमीन के सहारे वे खड़े हुए, एक लांस नायक को अपने कंधों पर चढ़ाए और ऊँचाई से गोलीबारी कर रहे विद्रोहियों पर दो हथगोले फेंकवाए । इससे विद्रोहियों की गोलीबारी रूक गई और इसका लाभ उठाते हुए, उन्होंने अपने सैनिकों को आक्रमण के लिए पंक्तिबद्ध किया ।

अडिग मनोबल, अनुपम साहस और दृढ़ निश्चय के साथ कर्नल नायर ने अपने शेष साथी-सैनिकों को प्रोत्साहित करते हुए घात लगाने वाले विद्रोहियों पर धावा बोल दिया । बड़ी तत्परता से, एक कट्टर विद्रोही को उन्होंने अपने अचूक वार से मौत के घाट उतार दिया । घात लगाने वाले विद्रोहियों पर धावा बोलकर आगे बढ़ते समय कर्नल नायर अपने साथी-सैनिकों से सदैव आगे रहे । अत्यंत विषम परिस्थितियों में भी विद्रोहियों से लगातार लोहा लेते रहने के लिए और अंततः उन्हें खदेड़ने में वे मराठा जवानों के लिए सतत प्रेरणा का स्रोत रहे । इस निकट की लड़ाई में लड़ते हुए कर्नल नायर विद्रोहियों की धुआंधार गोलीबारी की चपेट में आ गए और वहीं वीरगति को प्राप्त हुए । अपनी सुरक्षा की रंचमात्र चिंता न करते हुए धावा बोलने वाले शूरवीर कर्नल का शव मार्ग से 300 मीटर दूर विद्रोहियों द्वारा गोलीबारी शुरू करने की दिशा में पाया गया ।

कर्नल नीलकंठन जयचन्द्रन नायर, कीर्ति चक्र, ने उच्चतम सैन्य परम्परा के अनुरूप अदम्य साहस, अतुल पराक्रम एवं अनुकरणीय कर्तव्यनिष्ठा का परिचय देते हुए, अपने देश के लिए, अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दिया ।

गिरीश प्रधान, निदेशक

PRESIDENT'S SECRETARIAT

NOTIFICATION

New Delhi, the 25th January, 1994

No. 11-Pres/94.—The President is pleased to approve the award of Ashoka Chakra for most conspicuous bravery to:—

COLONEL NEELAKANTAN JAYACHANDRAN NAIR (IC-25070), KIRTI CHAKRA, 16, MARATHA LIGHT INFANTRY (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award—20th December, 1993).

Colonel Neelakantan Jayachandran Nair, Kirti Chakra, was Commanding Officer of 16 Maratha Light Infantry Battalion. The battalion had been deployed for mobile counter insurgency operations in Central and Northern Nagaland since May 1993. On successful completion of operations, the battalion was being de-inducted.

On 20th December, 1993, Col. Nair was leading the advance party of the convoy moving towards Mon on the Mokokchung-Mariani Road in Nagaland. At 8.40 A.M. when Col. Nair and his men were negotiating a series of road bends, they were ambushed by about one hundred armed insurgents from well prepared positions. The overwhelming fire from sophisticated and automatic weapons killed one Junior Commissioned Officer and 13 Jawans on the spot. Col. Nair, who was also seriously injured, did not lose courage nor was he unnerved.

Ten years ago, in 1983 in Mizoram, Col. Nair had gone through a similar experience of engaging the insurgents in a close quarter combat and had killed one of them, notwithstanding serious bullet injuries in both his thighs. Col. Nair had then been decorated with Kirti Chakra in recognition of his exceptional gallantry.

On the fateful morning of 20th December, 1993 in Nagaland, unmindful of his serious injuries, Col. Nair crawled to the other side of the road, balanced himself against the slope of the raised ground, ordered a Lance Naik to mount of his shoulders and threw two hand grenades on the firing position of the insurgents. Consequently, their firing stopped. Making use of this brief pause, Col. Nair organised his Jawans in an assault line. With indomitable courage and grim determination he charged at the insurgents killing one of them. Despite his serious personal injuries, throughout the charge, Col. Nair led from the front, exhorting and inspiring his men. Faced with such extraordinary courage, the insurgents broke ranks and fled. Under extremely difficult circumstances while grappling with the insurgents and eventually putting them to fight, Col. Nair was constantly a source of inspiration to the men under his command. In this action, Col. Nair bore the brunt of automatic fire of the insurgents and attained martyrdom. His body was found 300 metres away from the site of ambush near the firing position of the insurgents.

Thus Colonel Neelakantan Jayachandran Nair, Kirti Chakra, in the best traditions of the Indian Army, displayed courage and gallantry of the highest order, much above and beyond the call of duty.

G.B. PRADHAN, Director

Printed by the Manager, Govt. of India Press, Ring Road, Maya Puri, New Delhi-110064
and Published by the Controller of Publications, Delhi-110054, 1994